श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

April - 2021

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ६

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. बरसात गिरने पर तुरंत उत्पन्न हो जाते मेंढक ..... कहलाते हैं ।
२. हम जैसा कर्म करते हैं, वैसा फल इस भव में और ..... मिलता है ।
३. पंद्रह कर्मभूमिओ में रहे साधुओं को ..... सूत्र से वंदन किया जाता है ।
४. ..... की भावना को साकार करने के लिये धर्म की आवश्यकता है ।
५. श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म का उदय मानकर समता धारण करे वह ..... कहलाता है ।
६. शुभ संस्कार में ..... मिले तो शुभ भाव और शुभ भव सुलभ बनते है ।
७. इस मिले हुए मानव भव को सफल करना है तो ..... प्राप्त करना होगा ।
८. नेमिनाथ प्रभु पाँचवे भव में ..... थे ।
९. भवभव से थके इस भवमुसाफिर का विश्राम स्थल ..... है ।
१०. अनादि की हार की बाजी को जीत में पलटने के लिये ..... को जीवन में स्वीकार करें ।
११. अन्य जलचर प्राणी ..... के आकार के मत्स्य देखकर सम्यग् दर्शन पा सकते हैं ।
१२. सम्यग् प्रकार से वचन बोलना वह ..... है ।
१३. कर्णकंटक वाणी सुनकर भी साधु मौन धारण कर समता रखे वह ..... है ।
१४. ..... गुणस्थानक सुखकर श्रेणी क्षपक मंडवाई ।
१५. धर्मप्रेमी व्यक्ति जीवन में सदा ..... डरता है ।
१६. उवसग्गहरं सूत्र में फलवर्णन पूर्वक ..... मांगने में आया है ।
१७. छठवे भव में मरुभूति का जीव ..... बना ।
१८. दाक्षिण्यता से अलंकृत व्यक्ति को बडे भी ..... देने को तैयार होते है ।
१९. नेमिनाथ प्रभु ..... पर निर्वाण पाये ।
२०. सुलस ने ..... की सलाह मुजब पिता का उपचार किया ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. भद्रबाहू स्वामी के भाई का नाम क्या था ?
२. यक्षा साध्वीजी को वंदन करने आये श्रीयक को किसकी प्रेरणा दी ?
३. पार्श्वनाथ प्रभु दूसरे भव में क्या थे ?
४. मन को अशुभ, पापकारी, सावद्य प्रवृति में से अटकाना क्या है ?
५. विश्वभूति कौन थे ?
६. सम्यग् प्रकार के उपयोग सहित प्रवृति को क्या कहते है ?
७. प्रभु ने हमारे अंतर में किसकी दिव्य प्रभा को प्रगट किया ?
८. एरावत और हिरण्यवंत क्षेत्र के बीच में क्या है ?
९. श्री पार्श्वनाथ प्रभु ने कौन से भव में तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया ?
१०. दुनिया में आज करोडों के कौभांड होते है उसके पीछे क्या कार्यरत है ?
११. पोपट और मैना का समावेश किस प्रकार के खेचर में होता है ?
१२. जय वियराय सूत्र में वीतराग परमात्मा के पास सर्व प्रथम क्या मांगा है ?
१३. मैल, धूल या गर्मी के परिताप से पसीना आये फिर भी स्नान की इच्छा न करना क्या है ?
१४. उरपरिसर्प याने क्या ?
१५. नेमिनाथ प्रभु शंख राजा थे तब राजीमती क्या थी ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) भासेसणा २) पूअण ३) तत्थ ४) अंतरदीवा ५) इर्या ६) एरवय ७) परत्थकरणं ८) नउल
९) नाह १०) निक्खेवणा ११) विसहर १२) जइ-वि १३) अहे १४) हुंति १५) अविग्घेणं
१६) खयरा १७) कल्लाण १८) भयवं १९) खुहा २०) पन्ना

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) क्षमा	१) रैवतक
२) अरति	२) नागेन्द्र
३) चेष्टानिवृति	३) मंत्र
४) क्रोध	४) परिषह
५) नवकार	५) संवर
६) सुलस	६) चूहा
७) विषधर फुलिंग	७) दाक्षिण्यता
८) श्री अरिष्ट नेमि	८) आश्रव
९) भुजपरिसर्प	९) कायगुप्ति
१०) श्रीयक	१०) पापभीरुता

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. सम्यक्त्व प्राप्त करने के पश्चात श्री पार्श्वनाथ प्रभु के कितने भव हुए ?
२. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कुल भेद कितने ?
३. अंतरद्वीप की संख्या कितनी ?
४. आगम में निर्दोष आहार पानी कितने दोष रहित कहा गया है ?
५. अधोलोक में कितने योजन गहराई में तिर्यंच पंचन्द्रिय के स्थान है ?
६. श्री पार्श्वनाथ प्रभु कितने श्रमणो के साथ मोक्ष में गये ?
७. संवरतत्व में यति धर्म कितने ?
८. श्री नेमिनाथ प्रभु ने कितने पुरुषों के साथ दीक्षा ग्रहण की ?
९. जयवीयराय सत्र में वीरताग प्रभु के पास कितनी वस्तुओं की याचना की गई है ?
१०. कुल मनुष्य क्षेत्र कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. सर्व चैत्यवंदन सूत्र से तीन लोक के सभी चैत्यों को वंदन किया जाता है ।
२. प्रभु पार्श्वनाथ को कुंड सरोवर के किनारे कायोत्सर्ग ध्यान में लीन देखकर एक वन हाथी को जातिस्मरण ज्ञान होता है ।
३. जंबद्वीप के भरत और हिमवंत क्षेत्र के बीच शीखरी पर्वत है ।
४. माता पिता मृत्यु को प्राप्त होने के बाद राजा ने मरुभूति को राज पुरोहित बनाया ।
५. नेमित्तिक ने नेमिकुमार के विवाह का मुहुर्त श्रावण वदि छठ का निकाला ।
६. युग मात्र भूमि देखकर शुद्ध निर्जीव मार्ग में चलना वह इर्या समिति है ।
७. प्रभु का ध्यान ध्याने से सारे द्वंद मिट जायेंगे ।
८. पाप भीरु मानवी अपयश के कलंक से भयभीत होता है ।
९. वराह मिहिर किसी राजा के पुत्र के भविष्य कथन में झूठे पडे ।
१०. मरुभूति के चौथे भव में कमठ कुरंग नाम का भील्ल था ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. मुझे मानुषी स्त्री पर प्रेम नहीं है, मुझे मुक्तिवधु पर प्रेम हुआ है ।
२. यह सूत्र चैत्यवंदन में स्तवन के स्थान पर और नव स्मरण में भी बोला जाता है ।
३. इस भव में भी धार्मिक निमित्त पूर्व भव के संस्कारो की सहायता से जीव को उत्थान के मार्ग पर आगे बढा सकते हैं ।
४. साधु की प्रज्ञा अच्छी हो तो अच्छा पढे, बहुश्रुत बने ।
५. जीवन में से पापभीरुता जब विदा होती है, तब धीरे धीरे पापप्रवृति बढती जाती है ।
६. बेटा, अब मुझे तेरा भविष्य उज्वल नहीं दिखाई देता ।
७. ऐसी धूर्तता करनी होती तो मैं आज सोने के महल में रहता ।
८. ज्यों ज्यों संवर की आराधना होती कर्मो का आगमन कम होता जायेगा ।
९. संपति के बजाय सद्गुण कीमती होते हैं ।
१०. क्षमा सागर प्रभु तो सहन करेंगे परंतु मैं सहन नहीं करुंगा ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. साधुवंदन सूत्र २) माघ कवि में रहा हुआ दाक्षिण्यता का अभाव ।
३) परिषह याने क्या ? परिषह कितने ? कोई भी दो समझाइये ४) श्री पार्श्वनाथ का छठवां भव
५) अशठ याने क्या उदाहरण सहित समझाओ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४, सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com